

ब्रह्म ज्ञान योग संस्थान

विस्वाँ सीतापुर



प्रकृति से कैसे लें!

सभी देवता दे रहे, क्यों बैठ है मौन !

लेना सीखों गुरु से, भेद छिपा है कौन !!

लेना तो है जीव को, तन को, मन को नाहिं !

भेद छिपा है दृष्टि में, दृष्टि को जाना नाहिं !!

मुख्य दृष्टि तो चार है, दृष्टि बहुत सी होय !

इन्हीं चार को सीख लो, जन्म सफल तब होय !!

मित्रों दृष्टि चार है, जानों इनका भेद !

सब कुछ इन्हीं से मिलेगा, जानों आत्म अभेद !!

सहज, दूर, सम जानिये, दृष्टि विवेक की जान !

भेद इन्हीं का जान लो, जीव का हो कल्याण !!

सहज, दूर, सम दृष्टि हो, दृष्टि विवेक भी होय !

भेद इन्हीं का जान लो, काज पूर्ण सब होय !!

मन और प्रकृति को सम करो, यदि लेना कुछ होय !

केंद्रबिंदु उस वस्तु पर, सम दृष्टि यह होय !!

स्वर्ग लोक का देवता, कल्पवृक्ष मन होय !

उसी वस्तु पर दृष्टि हो, जो भी लेना होय !!

अधिकार प्रकृति पर पाइए, सम दृष्टि जो होय !

मन भविष्य को देख ले, दूर दृष्टि है सोय !!

कुमति को करती सुमति है, दृष्टि विवेक है सोय !

स्थिर करती सुरत को, सहज दृष्टि जो होय !!

शक्ति केंद्र है गुरु का, यही ईश्वरीय केंद्र !

आत्मघट भी यही है, सार मूल यह केंद्र !!

चारों दृष्टि पाइये, सन्मुख होवे जीव !

बहुत दिनों से भटकते, अब तो खोजो पीव !!

--- परम वाणी ---

जीव हमें अति प्यारे लागें, मैं उनका आधार !

अंश रूप में जीव सभी है, मैं हूँ सार का सार !!

लक्ष्य जीव का केवल मैं हूँ, मैं हूँ अगम अपारा !

पूजा, जप, तप, ध्यान फँसे सब, इनसे हूँ मैं न्यारा !!

क्रिया, कर्म कुछ करना नाहीं, तन, मन, सुरत से न्यारा !

सन्मुख होकर एक है होना, खेल दृष्टि का सारा !!

दृष्टि, सुरत की पलटि कर, सहज दृष्टि हो जीव !

आत्म घट तब प्रकट हो, सन्मुख होवे पीव !!

कहाँ - कहाँ यह जीव फँसा है, इस पर करो विचारा !

तीरथ, व्रत, कथा, भागवत, ज्ञान, ध्यान संसारा !!

सात लोक और पाँच तत्व में, द्वैत फँसा संसारा !

योग जाल में जगत फँसा है, जीव हो इनसे न्यारा !!

सतयुग, त्रेता, द्वापर , कलयुग, राम-कृष्ण अवतारा !

दो से जो भी प्रकट हुए है, मत खोजो संसारा !!

स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महाकारण, परम तत्व है न्यारा !

क्रिया, कर्म से मिलिहैं नाहीं, मत भरमों संसारा !!

सब कुछ छोड़ि शरण हो गुरु की, तब है निस्तारा !!

मन और सुरत से जीव हो न्यारा, दृष्टि पलटि भव पारा !!

■ कैसे रहें?

मौन रहो, वाणी का संयम, मन को वश में रखना !

ध्यान दृष्टि, गुरु की वाणी पर, सदा समर्पित रहना !!

असुर पाँच संग क्रोध के, रहना इनसे दूर !

तुरत गिराते शिखर से, लाभ से करते दूर !!

तीन लोक यह माया के हैं, देवी-देवता माया !

माया को भवसागर कहते, जीव समझ नहिं पाया !!

मछली का घर पानी ही है, जीव का घर है माया !

मछली पानी में डूबे नहिं, जीव डूबें क्यों माया !!

जीव को ऐसी कला सीखनी, कभी न डूबे माया !

मायाधीश यह स्वयं जीव हो, चेरी इसकी माया !!

पूजा पाठ में जीव फँसा है, पूजा पाठ है माया !

दृष्टि बदलकर, सन्मुख होवे, जीव न झूंबे माया !!

रूपया, पैसा, धन और दौलत, यह छाया है माया !

इनको अगर पकड़ना चाहों, पकड़ो “सत्य” अमाया !!

■ ध्यान क्या है?

दृष्टि सुरत की ध्यान है, जहाँ गयी वहाँ ध्यान !

लेना हो जिस वस्तु को, वहीं टिकाओं ध्यान !!

■ लोकों में कैसे जायें?

जाना हो जिस लोक में, सुरत से जाना होय !

भ्रेद यही अति गुप्त है, बिरला जाने कोय !!

■ सन्मुख कैसे हो?

दृष्टि सुरत की पलटकर, सहज दृष्टि हो जीव !

आत्मघट तब प्रकट हो, सन्मुख जीव के पीव !!

■ संसार क्या है?

मिथ्या, माया और असत्य, है प्रपञ्च संसार !

सरकरा है हर समय, उसे कहें संसार !!

जीव के रहने के लिये, बना है यह संसार !

जीव और जीवन इसी में, जीवन का आधार !!

■ जीव क्या है?

जीव अंश है आत्मा, प्राण रूप में जीव !

तन में वास है जीव का, तत्व रूप में जीव !!

परम तत्व है आत्मा, तत्व बन गया जीव !

संचालन मन कर रहा, माया में है जीव !!

■ अज्ञान क्या है?

खुद को शरीर है मानता, मन को माने ईश !

अज्ञान, अविद्या में फँसा, भूल गया जगदीश !!

■ ब्रह्म क्या है?

जगत व्याप्त है ब्रह्म में, लोकों का आधार !

संचालन है कर रहा, तीन लोक का सार !!

जो आकाश है दिख रहा, ब्रह्म वही है तत्त्व !

वेदमार्ग है ब्रह्म का, आत्म होय अतत्त्व !!

■ आत्मा क्या है?

आदि, अनादि, अखण्ड है, परिवर्तन से मुक्त !

एक अकेला परमपद, परम धार से युक्त !!

सब का मालिक एक है, सभी का है आधार !

पूर्ण अकर्ता सत्य है, यही सार का सार !!

ईश्वर, अल्लाह, राम है, यही आत्मा होय !

विश्व आत्मा भी कहें, यही अनामी होय !!

चौथा लोक, अलोक है, मन माया से पार !

यही जीव का लक्ष्य है, भवसागर से पार !!

तत्त्व लोक कोई नहीं, न है कोई शरीर !

अनहदनाद प्रकाश नहिं, पूर्ण मोक्ष के तीर !!

और सभी हैं चल रहें, यही अचल पद होय !

सन्मुख होकर बोध हो, इसका ज्ञान न होय !!

शिव है सार संसार का, तीन लोक का ब्रम्ह !

सार का सार है आत्मा, जानों इसे तुरंत !!

सभी लक्ष्य जो जीव के, तुरत ही पूरे होय !

केवल दृष्टि है बदलना, सन्मुख जीव जो होय !!

जीव को कहते आत्मा, उनको कहिये मूढ़ !

जीव को बनना आत्मा, भेद है इसका गृढ़ !!

सभी आत्मा हैं नहीं, सभी हैं केवल जीव !

आत्मा बनना लक्ष्य है, जीव से बनना पीव !!

आत्मा खुद को मानते, ध्यानी, योगी, जीव !

सतगुरु को खोजा नहीं, कैसे मिलेगा पीव !!

आत्मा केवल एक है, शेष सभी हैं जीव !

जिनको सद्गुरु मिल गया, बने जीव से पीव !!

■ मन धनवान कैसे हो?

आकाश तत्व से मन बना, मन से बनी है देह !

ईश्वर अंश यह जीव है, है अपरोक्ष विदेह !!

यह मन गंदा किसलिए, है निर्मल स्वच्छ आकाश !

संगति का यह असर है, रहे इन्द्रियों साथ !!

निर्मल, स्वच्छ और साफ मन, सुमति विवेकी धीर !

संगति इसकी प्रभू संग, मोक्ष, मुक्ति के तीर !!

हल्का मन झूंबे नहीं, ना होवे यह लिप्त !

माया भी बस में रहे, रिद्धि, सिद्धि से युक्त !!

चोरी, झूठ, फरेब से, मन पर पड़े दबाव !

हरदम यह सोचा करे, जिससे बुरा प्रभाव !!

मन को जोड़ो स्त्रोत से, सन्मुख धार के होय !

जगत, जीव और आत्मा, तीनों एक ही होय !!

पूजा, सजदा इसलिए, अहंकार मरि जाय !

तभी समर्पण प्राप्त हो, मन बस में हवै जाय !!

मन में जितनी नम्रता, उतना ऊँचा मन !

उतना ही ऊँचे उठो, सभी प्राप्त हो धन !!

ऊँचे पानी न टिके, नीचे ही ठहराय !

नीचा होवे भर - भर पिये, ऊँचा प्यासा जाय !!

गुरु से पर्दा यदि रखो, पर्दा परमेश्वर से होय !

गुरु से जो-जो तुम करो, वह सब परमेश्वर से होय !!

धोखे सब संसार में, सत्य छिपा कहीं और !

धोखे में पड़ना नहीं, सत्य का पकड़ो ठौर !!

धोखे सब मन क्षेत्र में, मन सन्मुख हो ईश !

तीनों मिलकर एक हो, मन, जीव, जगदीश !!

मन, माया से जग बना, निर्गुण, सगुण हैं रूप !

जीव है पकड़े इन्हीं को, खोजे, अचल, अरूप !!

सुरेशादयाल

ब्रह्मज्ञान योग संस्थान मोचकला

बिसवाँ सीतापुर (उ० प्र०)

सम्पर्क सूत्र - 9984257903